21 / 06 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

महान् पद की बुकिंग के लिये
महीन रूप से चैकिंग करना

➢➢ तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो... ये गीत सुनते हुए मैं आत्मा ये देह और देह की दुनिया छोड़ पहुँच जाती हूँ सूक्ष्म वतन में...

➳ _ ➳ चारों और सफ़ेद चमकीले प्रकाश से भरी बादलों की दुनिया...

→ जहाँ चारों और फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते नजर आ रहे हैं...

■ एक बड़े से बादलों की पहाड़ी पर बैठे हुए हैं बापदादा...

➳ _ ➳ फरिश्तों की दुनिया में बापदादा हाथों में रजिस्टर लिए सतयुग में ऊँच पद पाने की एयरकण्डीशन सीट के लिए बुकिंग कर रहे हैं...

■ मैं आत्मा भी अपनी बुकिंग करने के लिए लाइन में खड़े हो जाती हूँ...

➢➢ बापदादा बता रहे हैं की एयरकंडीशन सीट लेने के लिए क्या-क्या कंडीशंस हैं:-

➳ _ ➳ अपनी महीन चेकिंग करो, बच्चे... अपने को, जहाँ चाहो, जैसे चाहो वैसे सैट कर सकते हो...?

→ मैं आत्मा अपनी चेकिंग करती हूँ की क्या मैं अपने मन-बुद्धि को जहाँ चाहूँ वहां लगा सकती हूँ...?

→ क्या मेरा मन मेरे वश में है या किसी व्यक्ति, वस्तु, वैभवों के परवश तो नहीं...?

→ मेरे संकल्प मेरे लॉ एण्ड ऑर्डर में हैं...?

→ क्या मैं आत्मा अपने पुराने स्वभाव संस्कारों के वश में तो नहीं हो जाती हूँ...?

■ मैं आत्मा अपने मन को समझाती हूँ की इस संसार के सभी चीज अविनाशी हैं...

■ मैं आत्मा हूँ और इस शरीर के द्वारा कर्म करती हूँ...

■ सभी स्थूल और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों की मैं आत्मा मालिक हूँ...

■ मुझे अपने मन के वश नहीं होना है अपने मन को वश में करना है...

■ अपने पुराने स्वभाव-संस्कारों के वशीभूत नहीं होना है...

▶ मैं आत्मा एकाग्र होकर भृकुटी के मध्य स्वयं को चमकता हुआ देख रही हूँ...

▶ मैं आत्मा स्वयं को बार-बार स्मृति दिलाती हूँ की मैं एक आत्मा हूँ... शरीर नहीं...

- मेरे सभी कर्मेन्द्रियाँ आर्डर प्रमाण चल रही हैं...
- मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी होने के स्वमान में टिक जाती हूँ...
- मैं आत्मा स्व पर राज्य कर विश्व राज्य अधिकारी बन रही हूँ...

➳ _ ➳ प्यारे बच्चे... क्या बाप, शिक्षक और सतगुरु तीनों ही सम्बन्ध निभाने में पास विद ऑनर हो...?

→ मैं आत्मा चेकिंग करती हूँ की क्या मैं बाप के सम्बन्ध में फरमानबरदार हूँ...?

→ क्या एक बाबा ही मेरा संसार है या मैंने माया को भी अपना संसार बनाया है...?

→ जिस भगवान को ढूँढने के लिए दर-दर भटक रही थी अब वो सामने खड़ा है तो हे मेरे मन उसको छोड़ बाहर किसे ढूंढ रहा है...?

- मैं आत्मा स्वयं से बात करती हूँ... क्या भगवान से भी बढकर कोई देहधारी तुझे वो प्यार, सुख दे सकता है...?
- वो निस्वार्थ स्नेह सिर्फ और सिर्फ एक परमात्मा से ही मिल सकता है... वही मेरा सबकुछ है...

➳ _ ➳ मीठे बच्चे... शिक्षक के सम्बन्ध में शिक्षा में वफादार और ईमानदार हो...?

→ मैं आत्मा चेकिंग करती हूँ क्या मैं आत्मा रेगुलर पाठशाला जाती हूँ और शिक्षा ग्रहण करती हूँ...?

→ क्या मैं पढाई कभी मिस तो नहीं करती... कोई बहाने तो नहीं बनाती...

→ क्या मैं आत्मा सदा इस बात की स्मृति में रहती हूँ की पढ़ाने वाला कोई मामूली शिक्षक नहीं, स्वयं भगवान मुझे पढ़ाते हैं...?

- मैं आत्मा चिन्तन करती हूँ की स्वयं भगवान सुप्रीम शिक्षक बन परमधाम से रोज मुझे पढ़ाने आते हैं...
- अवतरित होकर भाग्यविधाता मेरा भाग्य जगा रहे हैं तो मुझे भी पढाई पढकर अपना उंचा भाग्य बनाना चाहिए...
- राजाई प्राप्त करने के लिए बाबा मुझे राजयोग सिखा रहे हैं...

➳ _ ➳ मेरे बच्चे... सतगुरू के सम्बन्ध में आज्ञाकारी हो...?

→ क्या मैं आत्मा सतगुरु की हर आज्ञा का पालन करती हूँ...?

→ उनकी बताई राह पर सत्यता से चल रही हूँ...?

→ ईश्वरीय नियम, मर्यादाओं का पालन कर सदा श्रीमत पर चलती हूँ...?

- परमात्मा सतगुरु बन परमात्म शक्तियों और वरदानों को प्यार से मुझ पर बरसा रहे हैं...
- सत्य की राह दिखाने वाला एक सच्चा-सच्चा सतगुरु तो भगवान् ही है...

■ वही मुझे इस विषय सागर से पार ले जा सकता है...

■ अज्ञानता के अंधकार का विनाश कर मुझे सोझरे में ले जाना वाला एक परमात्मा सद्गुरु ही है...

▶ मैं आत्मा अमृतवेले से लेकर रात तक एक बाबा से सर्व संबंधों का अनुभव कर रही हूँ...

▶ मैं आत्मा बाप की पालना का अनुभव कर रही हूँ...

▶ बाबा की शिक्षाओं को सच्चे दिल से ग्रहण कर रही हूँ... एक-एक ज्ञान रतन की गहराई में जाकर ज्ञान मोतियों से स्वयं का श्रृंगार कर रही हूँ...

▶ बाबा की श्रीमत का हाथ पकड चल रही हूँ... सतगुरु का वरदानी हाथ सदा अपने सिर के ऊपर अनुभव कर रही हूँ...

▶ मैं आत्मा चारों ही सब्जेक्ट में पास विद आनर होने का पुरुषार्थ कर रही हूँ...

▶ मैं आत्मा बाप की, शिक्षक की और सतगुरू तीनों की स्नेही, त्रिमूर्ति-स्नेही बनकर चल रही हूँ...

➳ _ ➳ बच्चे... तकदीरवान विशेष आत्मा होने की विशेषता में सदा स्थित रहते हो...?

→ मैं आत्मा चेकिंग करती हूँ की क्या मैं आत्मा सदा विशेष आत्मा होने की स्मृति में रहती हूँ...?

→ क्या कभी विशेष, और कभी साधारणता में तो नहीं आ जाती हूँ...?

→ क्या अपनी विशेषताओं से ईश्वरीय कार्य में सदा सहयोगी बनती हूँ...?

■ मैं आत्मा चिन्तन करती हूँ... स्वयं भगवान ने आकर कोटो में से मुझे चुना है और अपना बनाया है...

■ कहाँ मैं अपने को एक साधारण समझती थी और भगवान ने मुझे विशेषओं से नवाजा है... अपना सहयोगी बनाया है...

■ मुझे अपनी विशेषताओं को जानकर कर्म में लगाना है...

▶ मैं आत्मा एकाग्र होकर अपनी सर्व प्राप्तियों और खजानों को स्मृति में लाती हूँ...

▶ मैं आत्मा सरलयोगी, सहजयोगी, सर्व प्राप्ति सम्पन्न होने का अनुभव कर रही हूँ...

▶ मैं आत्मा बापदादा के क़दमों में कदम रख चलते जा रही हूँ... अपने सभी विशेषताओं को भगवान के कार्य में लगा रही हूँ...

▶ मैं आत्मा सदा इसी स्मृति में रहती हूँ की मुझे बाप समान बनना है...

▶ मैं आत्मा सर्वशक्तियों व सर्व-विशेषताओं रूपी खजानों से सम्पन्न बन एयर-कण्डीशन्ड सीट की बुकिंग कर रही हूँ...